SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बाल्यावस्था में शिक्षा के प्रति परिवार एवं शिक्षक में जागरूकता पर एक अध्ययन

योगेन्द्र कुमार, शिक्षा विभाग
रामकृष्ण विवेकानंद कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, बगोदर, गिरिडीह, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
योगेन्द्र कुमार
E-mail : yk1990.karvi@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/01/2026
Revised on : 19/03/2026
Accepted on : 28/03/2026
Overall Similarity : 00% on 20/03/2026

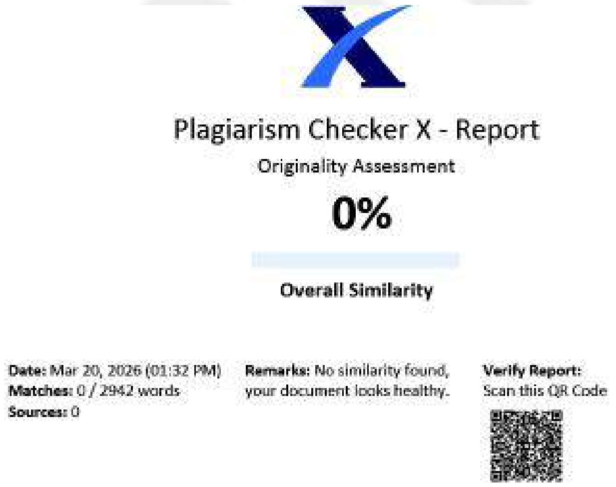

शोध सार

बाल्यावस्था मानव जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील चरण है, जिसमें बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक विकास की नींव रखी जाती है। इस अवस्था में प्राप्त अनुभव बच्चे के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं, इसलिए शिक्षा का प्रारंभिक स्वरूप अत्याधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। बाल्यावस्था में शिक्षा केवल औपचारिक ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह बच्चे के व्यवहार, सोच, भाषा और मूल्यों के विकास का आधार बनती है। इस प्रक्रिया में परिवार और शिक्षक दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। परिवार बच्चे का पहला शिक्षण स्थल होता है, जहाँ वह जीवन के मूलभूत कौशल सीखता है, जबकि शिक्षक उसे व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। यदि दोनों के बीच जागरूकता और सहयोग हो, तो बच्चे का समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि परिवार एवं शिक्षक की जागरूकता बाल्यावस्था में शिक्षा को किस प्रकार प्रभावित करती है तथा इसके अभाव में बच्चों के विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिससे विषय का व्यापक विश्लेषण संभव हो सके। निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि जिन बच्चों को परिवार और शिक्षक दोनों का सहयोग प्राप्त होता है, वे शैक्षिक एवं सामाजिक दोनों क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, जागरूकता के अभाव में बच्चों की सीखने की क्षमता, आत्मविश्वास तथा सामाजिक व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि अभिभावक और शिक्षक दोनों शिक्षा के प्रति सजग रहें और मिलकर बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

मुख्य शब्द

बाल्यावस्था शिक्षा, अभिभावक जागरूकता, शिक्षक की भूमिका, समग्र विकास, परिवार–विद्यालय समन्वय.

प्रस्तावना

बाल्यावस्था को मानव जीवन का आधारभूत एवं अत्यंत महत्वपूर्ण चरण माना जाता है, क्योंकि इसी अवस्था में बच्चे के सर्वांगीण विकास की नींव रखी जाती है। इस अवधि में प्राप्त अनुभव, परिवेश और सीखने के अवसर बच्चे के व्यक्तित्व, व्यवहार एवं सोच को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सिद्ध हो चुका है कि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में मस्तिष्क का तीव्र विकास होता है, जिससे सीखने की क्षमता अधिक प्रभावी होती है। अतः इस अवस्था में दी गई शिक्षा बच्चे के मानसिक , भाषाई, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को सुदृढ़ बनाती है और उसे भविष्य की औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करती है।

वर्तमान समय में शिक्षा की अवधारणा केवल विद्यालय तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया बन गई है, जिसमें परिवार एवं शिक्षक दोनों की समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार बच्चे का प्रथम शिक्षण स्थल होता है, जहाँ वह मूलभूत आदतें, मूल्य एवं व्यवहार सीखता है, जबकि शिक्षक उसे व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण एवं संरचित शिक्षा प्रदान करता है। यदि परिवार एवं शिक्षक दोनों शिक्षा के प्रति जागरूक, संवेदनशील एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो बच्चे के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है। अतः बाल्यावस्था में प्रभावी शिक्षा के लिए परिवार और शिक्षक के बीच समन्वय एवं जागरूकता अत्यंत आवश्यक है।

अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में समाज के तीव्र परिवर्तन, आधुनिकीकरण तथा व्यस्त जीवनशैली के कारण कई परिवारों में बच्चों की शिक्षा के प्रति अपेक्षित जागरूकता का अभाव देखा जा रहा है। पहले जहाँ परिवार बच्चों के प्रारंभिक शिक्षण एवं संस्कार निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाता था, वहीं आज अनेक अभिभावक समयाभाव, संसाधनों की कमी अथवा जागरूकता के अभाव के कारण इस जिम्मेदारी को पूरी तरह विद्यालय पर छोड़ देते हैं। दूसरी ओर, कई शिक्षकों में भी बाल मनोविज्ञान तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की समुचित समझ का अभाव पाया जाता है, जिसके कारण वे बच्चों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं विकास स्तर के अनुसार शिक्षण नहीं कर पाते। यह स्थिति विशेष रूप से चिंताजनक है, क्योंकि बच्चों के विकास में प्रारंभिक वर्षों का अत्यधिक महत्व होता है और इसी अवस्था में उनके व्यक्तित्व, व्यवहार तथा सीखने की नींव रखी जाती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा में परिवार की घटती भूमिका, शिक्षक–प्रशिक्षण में व्यावहारिक कमियाँ तथा सामाजिक एवं आर्थिक असमानताएँ भी बच्चों के समुचित विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के परिवारों में संसाधनों की कमी के कारण बच्चों को पर्याप्त शैक्षिक सहयोग नहीं मिल पाता, जबकि सामाजिक असमानताएँ भी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं। इन सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि बाल्यावस्था में शिक्षा के प्रति परिवार एवं शिक्षक की जागरूकता का गहन अध्ययन किया जाए, ताकि इन समस्याओं की पहचान कर उनके समाधान हेतु प्रभावी रणनीतियाँ विकसित की जा सकें और बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन संदर्भों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि बाल्यावस्था शिक्षा में परिवार एवं शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी है। विभिन्न भारतीय एवं विदेशी अध्ययनों ने अभिभावक जागरूकता और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरे संबंध को स्थापित किया है। अख्शाया (2025) के अध्ययन में यह पाया गया कि शिक्षकों के दृष्टिकोण से अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता कक्षा में बच्चों की भागीदारी और सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाती है। शर्मा, सेन, घोष एवं महारा (2025) ने भारतीय संदर्भ में यह स्पष्ट किया कि शहरी परिवारों में शिक्षा के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत अधिक होती है, जिससे बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा बेहतर होती है। इसी प्रकार

अमीन, यसमीन एवं डेका (2023) तथा रेनुका (2025) के अध्ययनों ने यह सिद्ध किया कि अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी बच्चों की साक्षरता, आत्मविश्वास तथा शैक्षिक प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ओटेरो–मेयर, गोंजालेज़–बेनिटो एवं एक्सपोसिटो–कासास (2025) ने अपनी व्यवस्थित समीक्षा में निष्कर्ष निकाला कि परिवार की भागीदारी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। किम एवं अन्य (2025) के अध्ययन ने भी यह दर्शाया कि अभिभावक सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्वभौमिक सकारात्मक संबंध पाया जाता है। अवाद, वरासना एवं शाहिन (2025) ने यह इंगित किया कि अभिभावकों की जागरूकता बच्चों के विकास के विभिन्न चरणों को समझने और उनके अनुसार उचित मार्गदर्शन देने में सहायक होती है। ट्रेजो एवं जनाह (2025) ने पालन–पोषण शैली को बच्चों के भावनात्मक विकास से जोड़ते हुए बताया कि सकारात्मक एवं सहयोगात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करता है। न्देग्वा एवं अन्य (2025) के अध्ययन में सामाजिक–आर्थिक कारकों को अभिभावक सहभागिता का महत्वपूर्ण निर्धारक माना गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संसाधनों की उपलब्धता भी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। आधुनिक संदर्भ में हो, कारगेती एवं अन्य (2025) तथा मेई, वांग एवं अन्य (2025) ने यह बताया कि तकनीक एवं एआई के बढ़ते प्रभाव के बावजूद अभिभावकों की भूमिका महत्वपूर्ण बनी रहती है, विशेषकर भावनात्मक एवं नैतिक विकास के क्षेत्र में। डे एवं मुखर्जी (2025) के अध्ययन ने भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह दर्शाया कि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति परस्पर संबंधित हैं और इनका संयुक्त प्रभाव बच्चों के विकास पर पड़ता है। समग्र रूप से इन सभी अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि बाल्यावस्था शिक्षा में परिवार एवं शिक्षक की जागरूकता, सहभागिता तथा समन्वय बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि परिवार एवं शिक्षक दोनों की भूमिका अनिवार्य है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बाल्यावस्था में शिक्षा के महत्व का अध्ययन करना।
2. परिवार की जागरूकता का बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव जानना।
3. शिक्षक की भूमिका एवं जागरूकता का विश्लेषण करना।
4. परिवार एवं शिक्षक के समन्वय का अध्ययन करना।
5. शिक्षा में सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँ

1. परिवार की जागरूकता और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध पाया जाता है।
2. शिक्षक की जागरूकता बच्चों के व्यवहार, रुचि एवं सीखने की क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।
3. परिवार एवं शिक्षक के बीच समन्वय से शिक्षा की गुणवत्ता एवं बच्चों के समग्र विकास में वृद्धि होती है।
4. अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी बच्चों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक प्रदर्शन को बढ़ाती है।
5. बाल्यावस्था शिक्षा के प्रति जागरूकता का स्तर बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करता है।

अनुसंधान विधि

1. **अनुसंधान प्रकार**: यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है।
2. **जनसंख्या एवं नमूना**: झारखंड के गिरिडीह जिला अंतर्गत बगोदर प्रखंड को जनसंख्या क्षेत्र के रूप में चयनित एवं परिसीमित किया गया है जबकि निम्न को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया हैः
   - 50 अभिभावक।
   - 30 शिक्षक।

- 50 विद्यार्थी।

3. **उपकरण**

प्रश्नावली: डॉ. एस. एन. सिन्हा प्रश्नावली एक लिखित उपकरण है, जिसके माध्यम से उत्तरदाताओं से जानकारी एकत्र की जाती है। इसका उपयोग अभिभावकों एवं शिक्षकों की जागरूकता मापने के लिए किया जाता है।

साक्षात्कार: डॉ. एम. बी. बुच साक्षात्कार में शोधकर्ता उत्तरदाता से सीधे बातचीत कर जानकारी प्राप्त करता है। यह विधि गहन एवं विस्तृत जानकारी एकत्र करने में सहायक होती है।

अवलोकन: डॉ. डी. एन. वर्मा अवलोकन में शोधकर्ता बच्चों के व्यवहार और गतिविधियों का प्रत्यक्ष अध्ययन करता है। यह बाल्यावस्था में वास्तविक स्थिति को समझने का प्रभावी माध्यम है।

4. **प्रदत संग्रहण**: प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के प्रदतों का उपयोग किया गया।

प्रदतों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में 50 अभिभावकों, 30 शिक्षकों एवं 50 विद्यार्थियों से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया।

परिकल्पना 1: लगभग 72 प्रतिशत अभिभावकों ने यह स्वीकार किया कि वे बच्चों की पढ़ाई में रुचि लेते हैं। जिन विद्यार्थियों को अभिभावकीय सहयोग मिला, उनकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई। इससे स्पष्ट है कि परिवार की जागरूकता और शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक संबंध है।

परिकल्पना 2: लगभग 80 प्रतिशत शिक्षकों ने बाल मनोविज्ञान एवं सक्रिय शिक्षण विधियों का उपयोग करने की बात कही। ऐसे शिक्षकों के विद्यार्थियों में बेहतर व्यवहार, रुचि एवं सीखने की क्षमता देखी गई, जिससे यह परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

परिकल्पना 3: अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यालयों में अभिभावक–शिक्षक बैठकें नियमित होती हैं, वहाँ 68 प्रतिशत विद्यार्थियों का प्रदर्शन बेहतर रहा। इससे परिवार एवं शिक्षक के समन्वय का सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट होता है।

परिकल्पना 4: लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि अभिभावकों के सहयोग से उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। ऐसे विद्यार्थियों का शैक्षिक प्रदर्शन भी उच्च पाया गया।

परिकल्पना 5: जिन बच्चों को घर एवं विद्यालय दोनों से सहयोग मिला, उनमें 75 प्रतिशत में बेहतर सामाजिक एवं भावनात्मक विकास देखा गया। इससे यह स्पष्ट है कि जागरूकता का स्तर बच्चों के समग्र विकास को प्रभावित करता है।

परिणाम

1. परिवार की जागरूकता बच्चों की शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
2. शिक्षक की जागरूकता एवं प्रशिक्षण से बच्चों के व्यवहार एवं सीखने की गुणवत्ता में सुधार होता है।
3. परिवार एवं शिक्षक के समन्वय से शिक्षा अधिक प्रभावी बनती है।
4. अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाती है।
5. बाल्यावस्था में जागरूकता का स्तर सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करता है।

बाल्यावस्था में शिक्षा का महत्व

बाल्यावस्था में शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह बच्चे के समग्र व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला होती है। इस अवस्था में प्राप्त शिक्षा बच्चे के जीवन के विभिन्न आयामों को प्रभावित करती है। सबसे पहले, भाषा विकास के माध्यम से बच्चा अपनी बातों को व्यक्त करना, समझना तथा संवाद स्थापित करना सीखता है, जो आगे की शिक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही सामाजिक कौशल का विकास होता है, जिससे

बच्चा दूसरों के साथ मिल–जुलकर रहना, सहयोग करना और सामाजिक नियमों का पालन करना सीखता है।

इसी प्रकार भावनात्मक संतुलन का विकास भी बाल्यावस्था शिक्षा का महत्वपूर्ण पहलू है, जो बच्चे को अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, नैतिक मूल्यों जैसे सत्य, ईमानदारी, अनुशासन और सम्मान का विकास भी इसी अवस्था में होता है, जो बच्चे के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार प्रारंभिक शिक्षा बच्चों को औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करती है तथा उनमें आत्मविश्वास, जिज्ञासा और सीखने की रुचि को बढ़ाती है, जिससे उनका समग्र विकास सुनिश्चित होता है।

परिवार की भूमिका एवं जागरूकता

परिवार बच्चे का पहला विद्यालय होता है, जहाँ से उसके जीवन की शिक्षा की शुरुआत होती है। बाल्यावस्था में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यही वह स्थान है जहाँ बच्चा अपने प्रारंभिक अनुभव प्राप्त करता है। परिवार बच्चों को प्रेरणा देने का कार्य करता है, जिससे उनमें सीखने की रुचि विकसित होती है। साथ ही, परिवार अनुशासन सिखाकर बच्चों में जिम्मेदारी और व्यवहारिक समझ विकसित करता है। इसके अतिरिक्त, माता–पिता द्वारा दिए गए मूल्य एवं संस्कार बच्चों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार यदि सीखने का अनुकूल वातावरण प्रदान करता है, जैसे पढ़ाई के लिए समय और संसाधन उपलब्ध कराना, तो बच्चों की शैक्षिक प्रगति बेहतर होती है।

यदि परिवार शिक्षित एवं जागरूक होता है, तो वह बच्चों को उचित मार्गदर्शन देने में सक्षम होता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ है कि जिन बच्चों को घर में पढ़ाई के लिए सहयोग, प्रोत्साहन एवं सकारात्मक वातावरण मिलता है, वे शैक्षिक रूप से अधिक सफल होते हैं तथा उनका आत्मविश्वास भी अधिक विकसित होता है।

शिक्षक की भूमिका एवं जागरूकता

शिक्षक बच्चों के जीवन में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत की भूमिका निभाते हैं। बाल्यावस्था में शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे बच्चों के समग्र विकास को दिशा देने का कार्य करते हैं। एक प्रभावी शिक्षक के लिए बाल मनोविज्ञान की समझ अत्यंत आवश्यक होती है, जिससे वह बच्चों की रुचि, क्षमता एवं आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण कर सके साथ ही, विभिन्न शिक्षण विधियों का ज्ञान शिक्षक को कक्षा को रोचक एवं प्रभावी बनाने में सहायता करता है।

इसके अतिरिक्त, बच्चों के साथ संवेदनशील एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार शिक्षक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है, जिससे बच्चों में सुरक्षा एवं आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है। समावेशी शिक्षा प्रदान करना भी शिक्षक का दायित्व है, ताकि सभी प्रकार के बच्चे समान रूप से सीख सकें। शोधों से यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षित, जागरूक एवं समर्पित शिक्षक बच्चों के बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है।

परिवार एवं शिक्षक का समन्वय

परिवार और शिक्षक के बीच सहयोग बाल्यावस्था शिक्षा की सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार है। जब दोनों मिलकर कार्य करते हैं, तो बच्चे को घर और विद्यालय दोनों स्थानों पर समान एवं सहायक वातावरण प्राप्त होता है। इस समन्वय के माध्यम से बच्चों की शैक्षिक एवं व्यवहारिक समस्याओं का शीघ्र समाधान संभव हो पाता है। साथ ही, शिक्षा में निरंतरता बनी रहती है, जिससे बच्चे के सीखने की प्रक्रिया बाधित नहीं होती।

इसके अतिरिक्त, परिवार और शिक्षक के संयुक्त प्रयासों से बच्चों के व्यवहार में सकारात्मक सुधार देखा जाता है तथा उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है। जब अभिभावक और शिक्षक एक–दूसरे के संपर्क में रहते हैं, तो वे बच्चे की प्रगति एवं समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि परिवार एवं शिक्षक के बीच प्रभावी समन्वय बच्चों के समग्र एवं संतुलित विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि बाल्यावस्था में शिक्षा के प्रति परिवार एवं शिक्षक की जागरूकता बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। परिवार, जो बच्चे का पहला शिक्षण स्थल होता है, यदि जागरूक एवं सहयोगात्मक हो, तो वह बच्चों को एक सकारात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण प्रदान करता है। ऐसे वातावरण में बच्चे न केवल शैक्षिक रूप से आगे बढ़ते हैं, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, अनुशासन एवं नैतिक मूल्यों का भी विकास होता है। दूसरी ओर, जागरूक एवं प्रशिक्षित शिक्षक बच्चों को प्रभावी, रोचक एवं बाल–केंद्रित शिक्षण प्रदान करते हैं, जिससे उनकी सीखने की क्षमता और रुचि में वृद्धि होती है। जब परिवार और शिक्षक दोनों मिलकर कार्य करते हैं, तो बच्चों के विकास की प्रक्रिया अधिक सशक्त एवं संतुलित हो जाती है। अतः यह कहा जा सकता है कि परिवार एवं शिक्षक का संयुक्त सहयोग ही बाल्यावस्था में शिक्षा को प्रभावी बनाता है और बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है।

सुझाव

1. अभिभावकों के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
2. शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण दिया जाए।
3. विद्यालयों में अभिभावक–शिक्षक बैठकें बढ़ाई जाएँ।
4. सरकारी नीतियों में ECCE (Early Childhood Care and Education) को बढ़ावा दिया जाए।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष ध्यान दिया जाए।

संदर्भ सूची

1. अख्शया, ई. (2025) प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा में अभिभावक सहभागिताः शिक्षकों के दृष्टिकोण. *Journal of Research ANGRAU,* 53(2), 84–89.
2. शर्मा, व.; सेन, र.; घोष, श. एवं महारा, प. (2025) भारत के दो शहरों में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के प्रति अभिभावकों की धारणा. International Journal of Early Years Education, 34(1), 121–138.
3. अमीन, र.; यसमीन, म. एवं डेका, ए. (2023) प्रारंभिक शिक्षा में अभिभावक सहभागिता और छात्र सफलता. *Journal of Research Administration,* 5(2), 2564–2575.
4. रेनुका, ए. (2025) प्रारंभिक बाल्यावस्था साक्षरता में अभिभावक सहभागिता का प्रभाव. *International Journal for Research in Education,* 14(3), 09–16.
5. किम, एस. एवं अन्य. (2025) प्रारंभिक बाल्यावस्था में अभिभावक सहभागिता और शैक्षिक उपलब्धिः एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन. *International Journal of Child Care and Education Policy,* 19(3), 1–18.
6. अवाद, एम. वाई. एच.; वरासना, एच. जे. एम. एवं शाहिन, एफ. बी. वाई. (2025) बाल विकास के चरणों के प्रति अभिभावक जागरूकता का अध्ययन. *BMC Public Health,* 25, 1–10.
7. ट्रेजो, एस. एवं जनाह, आई. (2025) पालन–पोषण शैली और भावनात्मक विकास का अध्ययन. *Journal of Foundational Learning and Child Development,* 1(1), 17–21.

****